Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 3, May-2018, ISSN 2230-7540

भारत और गुटनिरपेक्ष नीति

Sonu*

Research Scholar, Political Science, OPJS University, Churu, Rajasthan

----------X----------

गुटनिरपेक्ष नीति और भारत में विशेष संबध रहा है। गुटनिरपेक्ष आंदोलन के प्रमुख जनक नेहरू, नासिर और टीटो थें। भारत की ओर गुट निरपेक्ष आंदोलन को दिशा देने में नेहरू जी का विशेष योगदान रहा है। अतः अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में प्रारंभ से ही गुट निरपेक्षता का दृष्टिकोण होने के कारण भारत की चर्चा करना अंत्यंत प्रासंगिक है। गुट निरपेक्षता नीति का विश्व के किसी भी गुट के साथ द्विपक्षीय संबधों के आधार पर सैनिक समझौते में भाग न लेना है। इस नीति का पालन करने वाले राष्ट्र जहां एक ओर गुटबाजी की विश्व राजनीति से विलग रहते है। वहां दुसरी ओर विश्व शांति और सुरक्षा में प्रगति हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को भरपूर मदद देते है। इसका अर्थ कदापि तटस्थता की नीति नही है जैसा कि हम बता चुके है कि भारतीय प्रधानमंत्री नेहरू जी ने गुट निरपेक्ष की नीति का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा था- यदि स्वतंत्रता का हनन होगा, न्याय की हत्या होगी अथवा कही आक्रमण होगा तो वहा हम न तो आज तटस्थ रह सकते है। और न भविष्य में रहेंगें। यह नीति गुट निरपेक्षता देशों की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उठने वाली दैनदिन की ज्वलंत समस्याओं पर उनके गुणानुसार अपनी स्वतंत्र प्रतिक्रिया को व्यक्त करने के योग्य बनाती है।

भारत सोवियत सहयोग व मैत्री संधि तथा गुट निरपेक्षता:-

9 अगस्त 1971 को भारत और सोवियत संघ के बीच की गयी मैत्री व सहयोग संधि को लेकर गंभीर विवाद चलता रहा है कि इससे भारतीय गुट निरपेक्ष आंदोलन का उल्लघंन हुआ है। या नहीं इस बात का मुल्यांकन करने से पहले यहां इस संधि के पूर्व भारत के समझ तत्कालीन बाहरी चुनौतियों का जिक्र कर देना प्रांसगिक होगा। 1970 में पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तानी सरकार के बाहरी दमन के खिलाफ विद्रोह हुआ और स्वतंत्र देश की मांग उठी। पाकिस्तानी दमन से पीड़ित पूर्वी पाकिस्तान के करीब **90** लाख लोग भारत में शरणार्थियों के आवास भोजन एवं कपड़ों की व्यवस्था कर रही थी। वही दुसरी ओर पाकिस्तान ने भारत के विरूद्ध सैनिक युद्ध छेड़ने की तैयारियां शुरू कर दी। अमरीका ने घोषणा की कि वह भारत पाक युद्ध मे निष्क्रीय नहीं रहेगा और उसने चीन से घोषणा करवा दी कि वह भारत पाक में भारत के विरूद्ध पाकिस्तान की सहायता करेगा। इस प्रकार भारतीय सुरक्षा के समझ गम्भीर चुनौतियां उपस्थित हो गई। ऐसी अवस्था में सोवियत मैत्री एवं सहयोग संधि पर हस्ताक्षर करके गुट निरपेक्षता नीति का उल्लघंन किया है। दुसरी तरफ भारतीय एंव सोवियत शासकों और विदवानों के मत इस संधि से भारतीय गुट निरपेक्ष की नीति का किसी प्रकार का उल्लंघन नहीं हुआ है। उनका मानना है कि यह संधि भारत ओर सोवियत संघ के बीच बढती मैत्री व सहयोग का प्रतीक है।

अमरीका की दृष्टि में निर्गुट आंदोलन:-

कुछ वर्ष पूर्व निवर्तमान अमरीकी राजदूत वेरनन ए. वाल्टर्स ने कहा था कि संयुक्त राष्ट्र मंच पर उसे जितनी परेशानियां सोवियत संघ या चीन से नहीं हुई उतनी निर्गुट आंदोलन के राष्ट्रों से हुई है। राजदूत के अनुसार उस समय 102 निर्गुट राज्य जिनमें अधिकांश विकासशील और समाजवादी देश है। अमरीका के खिलाफ एकजुट है वे निर्गुट नहीं है। यह संयुक्त राष्ट्र संघ में 80 प्रतिशत मामलों पर अमरीका के खिलाफ मतदान करते थे। निर्गुट आंदोलन सौम्य होता जा रहा है किन्तु इसमें अभी वर्षो लग जांएगें।

गुट निरपेक्षता का भविष्य:-

गुट निरपेक्षता विश्व में राजनीति में राष्ट्रों के लिये एक विकल्प के रूप में निश्चय ही स्थायी रूप धारण कर चुकी है।

भारत पर चीनी आक्रमण और गुटनिरपेक्षता:-

भारत की गुट निरपेक्षता नीति की चर्चा करते समय भारत पर 1962 में चीन दवारा अचानक फौजी हमला करने के फल स्वरूप नीति प्रासंगिता के साथ साथ इस बात का विश्लेषण जरूरी है कि क्या भारत गुट निरपेक्षता की नीति से हट गया? जब चीन ने भारत पर बर्बर हमला किया तो सोवियत संघ जैसे हमारे पारस्परिक मित्र ने यह तर्क देकर अपने हाथ खींच लिये कि

www.ignited.in

भारत हमारा मित्र है तो चीन हमारा भाई उसने भारत को किसी भी प्रकार के हमले से बचाने से इन्कार कर दिया। उधर अमरीका की प्रतिद्वन्द्वी शक्ति ने भी युद्ध के दौरान भारत की ठोस मदद नहीं की। उसने उल्टे भारत पर यह दबाव डाला कि वह अमरीका दवारा प्रवर्तित सैनिक गठबंधनों में सम्मिलत हो जाये या फिर अमरीका की परमाणु छतरी स्वीकार कर ले अर्थात भारत पर आक्रमण होने पर अमरीका उसकी मदद करेगा। इन्हीं तर्को से प्रभावित होकर भारतीय संसद के अनेक सदस्यों ने यह मत व्यक्त किया था कि यदि भारत किसी महाशक्ति के सैन्य संगठन से जुड़ा होता तो उसे चीनी बर्बर हमले के दुर्दिन नहीं देखने पड़ते। इसी प्रकार के तर्क भारत दवारा गुट निरपेक्षता नीति अपनाये जाने की प्रासंगिकता पर प्रश्न चिन्ह खड़ा कर देते है।

असल में गुट निरपेक्ष भारत पर किसी शत्रु देश के द्वारा सैनिक आक्रमण करने से किसी नीति की असफलता नहीं मानी जाती है। इस बात की भी कोई गांरटी नहीं है कि सैन्य संगठन में सम्मिलत होने पर प्रवर्तक महाशक्ति सुरक्षा की गारन्टी देकर उसे शत प्रतिशत व्यवहार में भी पूरा कर सके। भारत के पड़ोसी पाकिस्तान का ही उदाहरण ले। 1965 में भारत पाक के युद्ध के दौरान अमरीका ने उसके दवारा प्रवर्तित सेन्टो एवं सिएटो के सदस्य होने पर भी निरपेक्ष भारत के विरूद्ध अपने गुट में बधें पाकिस्तान को शास्त्रीय मदद भी रोक दी। गुट निरपेक्ष नीति का अर्थ गुटबाजी में शामिल न होकर स्वतंत्र विदेश नीति का निर्धारण करना है। संकट की घड़ियो में भी स्वतंत्र नीति निर्माण गुट निरपेक्षता की परिचायक हैं। कुछ आलोचको का यह मानना है कि 1962 में भारत पर चीनी हमले के कारण भारत ने दुसरे देशों से पहली बार सैनिक सहायता स्वीकार की इससे पहले भारत अन्य देशों या महाशक्तियों से तकनीकी एव आर्थिक मदद भी लेता था सैन्य सामग्री नहीं। इस कारण भारत ने गुट निरपेक्षता का रास्ता छोड़ दिया। वास्तव में यह आलोचना निरर्थक एवं असंगत है। जैसा कि प्रो0 प्रो0 के0 पी0 मिश्र ने लिखा है कि भारत दवारा चीनी आक्रमण करने से उसकी गुट निरपेक्षता नीति में कोई मूलभूत परिवर्तन नहीं हुआ। जिसके दो कारण है।

1. साम्यवादी चीन के आक्रमण का मुकाबला करने के लिये सैन्य सामग्री दोनों गुटों से ली गयी।

2. गुट निरपेक्ष नीति का अर्थ कदापि यह नहीं है कि वह राष्ट्र अपनी सुरक्षा की नीति उपेक्षा की करे। अनेक देशो ने विगत में विदेशों से सैनिक सहायता ली है और अब भी गुट निरपेक्ष है।

युगोस्लाविया, इथियोपिया, घाना, लीबिया, अफगानिस्तान आदि के उदाहरण इस मत को पुख्ता करते है।

भारत पर चीनी आक्रमण का हमारी गुट निरपेक्षता पर यह सकारात्मक प्रभाव जरूर पड़ा कि पहले हम विश्व शान्ति और सुरक्षा के आदर्श की बात अधिक करते थे। परन्तु चीन बर्बर हमले से मोह भंग होने के कारण भारत ने सुरक्षा तैयारियां तेज कर दी है। यह आदर्शवाद एव यथार्थवाद का अच्छा मिश्रण है। जब चीनी हमले के बाद अनेक आलोचकों ने भारतीय गुट निरपेक्ष नीति की आलोचना की तो नेहरू जी ने स्पष्ट कहा था कि- यदि भारत गुट निरपेक्षता छोड़ देता है तो यह भंयकर नैतिक विफलता होगी। इस प्रकार स्पष्ट है कि चीनी हमले के बावजूद भारत गुट निरपेक्ष रास्ते पर डटा रहा। इससे विशेषतः राष्ट्र समाज के छोटे-छोटे और अपेक्षाकृत कमजोर सदस्यों के संदर्भ में राष्ट्रों की स्वतंत्रता और समता बनाए रखने में योग दिया है। इसने विश्व के पूर्व ध्रुवीकरण को रोककर विचार गत शिविरों के विस्तार को और प्रभाव को संयत करके तथा गुटों के अन्दर भी स्वतंत्रता की शक्तियों को प्रोत्साहन देकर अंतर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा बनाए रखने तथा उसे बढावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसने सयुंक्त राष्ट्र संगठन के भीतर और बाहर दोनों जगह बहुत से कल्याणकारी क्षेत्रांे में जैसे कि उपनिवेशों को स्वतंत्र कराने, प्रजातीय क्षमता को दूर करने तथा अल्प विकसित देशों के आर्थिक विकास के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान दिया है।

आज संयुक्त राष्ट्र के दो तिहाई से अधिक देश गुट निरपेक्षता के दायरे में आ चुके है। संयुक्त राष्ट्र संघ के विभिन्न मंचों से गुट निरपेक्ष राष्ट्रो ने विश्व शान्ति उपनिवेशनवाद के अंत, परमाणु अस्त्रों पर रोक निशस्त्रीकरण हिन्द महासागर को शान्ति का क्षेत्र घोषित करना, नयी अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के निर्माण आदि विषयों पर संगठित रूप से कार्यवाही की है और सफलता हासिल की है।

यह भी प्रश्न किया जाता है कि आज गुट निरपेक्षता का क्या औचित्य रह गया है? गुट निरपेक्षता की सार्थकता द्वितीय विश्व युद्ध के वातावरण में तो थी। किंतु पहले 15.20 वर्षो में अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में बहूत सारे परिवर्तन आये है शीतयुद्ध का अंत हो चुका है सोवियत संघ का विघटन हो चुका है। पूर्वी यूरोप के देशों में साम्यवाद को कब्र में दफनाया जा चुका है। वारसा पैक्ट भंग कर दिया गया है। नाटों की भूमिका में परिवर्तन आ रहा है जर्मनी का एकीकरण हो चुका है गुट निरपेक्षता का उदय शीत युद्ध के संदर्भ में हुआ था। और आज शीत युद्ध का अन्त हो जाने के कारण गुट निरपेक्ष आंदोलन अप्रांसगिक हो गया है। फरवरी 1992 में गुट निरपेक्ष राष्ट्रो के विदेश मंत्रियों की बैठक में मिश्र ने स्पष्ट तौर से स्पष्ट की थी कि इस आंदोलन को समाप्त कर देना चाहिए। उसका तर्क यह था कि सोवियत संघ के विघटन, सोवियत गुट तथा शीत युद्ध की समाप्ति के बाद गुट निरपेक्ष आंदोलन की प्रांसगिकता समाप्त हो गयी है। किंतु

www.ignited.in

बहुसंख्यक विदेश मंत्रियों ने इस विचार का विरोध किया था। उनका कहना था कि बड़ी संख्या में गुट निरपेक्ष देश अभी निर्धन एवं आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए है और सम्बद्ध राष्ट्रों तथा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों दवारा उनका नव औपनिवेशिक शोषण किया जा रहा है। उस स्थिति में उन्हें बचाने के लिए यह जरूरी है विकसित और विकासशील देशों के बीच आपसी सहयोग सुदृढ और सक्रिय किया जाए इसके लिए निर्गुट आंदोलन पर अपरिहार्य मंच का कार्य करेगा।

आज सयुंक्त राष्ट्र को केन्द्र बनाकर "नाम" महत्वपूर्ण अदा कर सकता है। निशस्त्रीकरण के क्षेत्र में गुट निरपेक्ष आंदोलन विश्व की पुकार की भूमिका निर्वाह कर सकता है और उसे यह भी सुनिश्चित करना होगा कि महाशक्तियों तीसरी दूनिया के देशों में घातक हथियारों का जमावड़ा न करे।

1993 मे आंदोलन का सदस्य बनने के लिए प्राप्त नये आवेदनों से यह सुस्पष्ट है कि सार्वभौम कार्य में गुट निरपेक्ष आंदोलन की निरंतर प्रांसगिकता बनी रही है। और महत्व भी बढा है। थाई लैण्ड व हौण्डुरास को नये सदस्य के रूप में प्रवेश मिला है। मैं मसिडोनियों और स्लोवाकिया को अतिथि के रूप में लिया गया। ऐसा कहा गया कि 21 वीं सदी आर्थिक युद्ध की होगी। आर्थिक दृष्टि से समृद्ध राष्ट्रों के गुट उभर कर स्वयं ही प्रतिस्पर्धा कर लेगें और इससे विकासशील राष्ट्रो की स्वतंत्रता और हितो को खतरा पहुंचेगा। इस खतरे को नियंत्रित करने के लिये उत्तर दक्षिणी संवाद को बनाये रखने में दक्षिण सहयोग और अंतर्राष्ट्रीय अर्थ व्यव्स्था को बनाने के लिए गुट निरपेक्ष आंदोलन और जी0 77 को एक होकर कार्य करना पड़ेगा। आज निम्नलिखित क्षेत्रों में गुट निरपेक्ष आंदोलन की प्रासंगिकता नजर आती है।

1. नई अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की पुरजोर कोशिश करना।
2. आणविक निशस्त्रीकरण के लिये दबाव डालना।
3. दक्षिण सहयोग को प्रोत्साहन देना।
4. एक ध्रुवीय विश्व व्यवस्था में अमरीकी दादागिरी का विरोध किया।
5. विकसित और विकासशील देशों के बीच सार्थक वार्ता के लिये दबाव डालना।
6. अच्छी वित्तीय स्थिति वाले गुट निरपेक्ष देशों जैसे ओपेक राष्ट्रों को इस बात के लियें तैयार करना कि वे अपनी फालतु धन पश्चिमी देशों के बैंको में जमा करने के बजाय विकासशील देशों में विकासात्मक उददेश्यों के लियें इस्तेमाल करें।

7. नव औपनिवेशिक शोषण का विरोध किया जाए।

गुट निरपेक्ष नीति ने स्वतंत्र विदेश नीति का सिद्धान्त देकर और नवोदित देशो को एक मंच उपलब्ध कराके सैनिक टकराव की दिशा में सम्भावित व्यापक रूझान को रोक दिया और शीत युद्ध का तनाव कम करने तथा शान्ति स्थापनी की दशा में प्रोत्साहन दिया। आपसी विचार विमर्श दवारा समझा बुझाकर और जोरदार प्रचार करके आंदोलन ने उपनिवेशवाद उन्मूलन की प्रक्रिया को भी गति प्रदान की। **1920** के बाद यह महसूस किया गया कि राजनीतिक उपनिवेशवाद का तो उन्मूलन हो रहा है। लेकिन नव स्वाधीन राष्ट्र आर्थिक दृष्टि से बहुत कमजोर है और औधोगिक देशों पर निर्भर है। जिससे लगता है कि निर्धन देशों पर धनी देशों की चैधराहट बराबर बनी हुई है। अतः नई अंतर्राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था स्थापित करने की मांग की जाने लगी। अब अंतर्राष्ट्रीय चिन्ता के विषय आर्थिक समस्या और पर्यावरण प्रदुषण रोकने की समस्या रह गई। लुसाका और अल्जीयर्स सम्मेलनों में अंतर्राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था का प्रस्ताव रखकर आंदोलन ने अब विश्व में प्रदूषण की समस्या पर ध्यान केंद्रित किया है। इससे सिद्ध होता है गुट निरपेक्ष आंदोलन शान्तिपूर्ण समतावादी विश्व व्यव्स्था स्थापित करने के विकासशील देशो का भविष्य उज्जवल बनाने के प्रयासों में निरन्तर प्रयास करता है। लेकिन इतिहास गवाह है कि अमेरिका भी यह प्रयत्न करता है कि वह गुट निरपेक्ष आंदोलनों में घुसपैठ करें क्यों कि तृतीय विश्व युद्ध के समर्थन के अभाव में सयुंक्त राष्ट्र संघ की महासभा व अन्य निकायों में उसे बहुत बार अपमानित होना पड़ता है। वैसे गुट निरपेक्ष आंदोलन के रिश्ते अमरीकी गुट से कभी मधुर नहीं रहे। यह स्वाभाविक था कि क्योंकि पश्चिमी साम्राज्यवादी नेता के नाते उसे सदैव बदनाम साम्राज्यवादी शासको का समर्थन करना पड़ा है। अतः अमरीकी समर्थकों को गुटनिरपेक्षता आंदोलन से कोई सैद्धांतिक या अवधारणात्मक सहारा प्राप्त नहीं होता। अमरीका को जो समर्थन आंदोलन में प्राप्त होते है। वे या तो रूसी वादी गुट की प्रतिक्रिया में प्राप्त होते है अथवा आर्थिक व सैनिक संबधों की कूटनीति क्षेत्रीय राजनीति के कारण प्राप्त होते है। यह स्वाभाविक है कि अवधारणात्मक सहारा न होते हुए भी सोवियत वाद की प्रतिक्रिया में अमरीका को आंदोलन के अंतर्गत कुछ खास मित्र प्राप्त होने लगे है। यह गुटवादी क्रिया प्रतिक्रिया यदि आंदोलन के भीतर जड़े जमा लेगी तो क्या निर्गुट वाद की जड़ें उखाड़ने लगेगीं।

सैनिक गुटवाद की राजनीति की पराजय के बाद साम्राज्य वादी गुटवादियों ने आंदोलन को अन्दर से विभक्त कर उस पर अपनी 'लावी' के अधिकार का प्रयत्न करने की रणनीति अपना ली थी। सैनिक गुटवाद अब राजनीति घड़ेबन्दी के रूप में आंदोलन में घुसपैठ करने लगा। क्या यह निर्गुट आंदोलन के लियें चुनौती पूर्ण नहीं हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. रामूर्ति मीणा-भारत अमेरिका संबंध, ए.बी.डी. पब्लिशर्स, जयपुर, 2004, पृ0 13
2. दीनानाथ वर्मा अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, ज्ञानदा प्रकाशन, पटना, 2००4, पृ0 283
3. आशोपा शील के 'राजस्थान पत्रिका' 8 जुलाई, 1999, पाकिस्तानी आतंकवाद।
4. राजस्थान की पत्रिका, आव्हान, जुलाई, 1999
5. महेश, तालिबान के सन्दर्भ में अमेरिकी आपातकाल, राजस्थान पत्रिका, 19 जुलाई, 1999
6. दैनिक भास्कर, 11 जुलाई, 1999 मानवता के लिए खतरा, ओसामा बिन लादेन रस रंग, जयपुर।
7. बिन लादेन के खिलाफ फतवा जारी, पंजाब केसरी, 29 जून, 1999

Corresponding Author

Sonu*

Research Scholar, Political Science, OPJS University, Churu, Rajasthan

E-Mail – bhardwajsonu80@gmail.com